उपदेशामृत

जीवन में पांच प्राप्तियाँ महत्वपूर्ण है,जो हमें कुसंग (सांसारिक प्रसंग) त्यागकर सतसंग करने से प्राप्त होती है एवं ईश्वर की प्राप्ति की और अग्रसर करती है।

1. ज्ञान प्राप्ति (सतत् सतसंग सेवन) – स्वाध्याय, कथा श्रवण, भगवत चर्चा, भगवतचिंतन (ईश्वर एवं उनके भक्तों के नाम, रूप, गुण, लीला, धाम, उपदेश एवं उपकार आदि का चिंतन), ध्यान (र्निविचार होकर जीव–ब्रह्म एकात्म का अनुभव) प्रमुख साधन है।
2. वैराग्य प्राप्ति (कामनाओं का त्याग)–शरीर, संसार के लोग, धन–सम्पत्ति, मान–सम्मान, विषय–भोगो (रूप, रस, शब्द, गंध, स्पर्श आदि) की नश्वरता का चिंतन एवं आसक्ति का त्याग आदि प्रमुख साधन है।
3. भक्ति प्राप्ति (ईश्वर की उपसना)–शरणागति, पूजा, ध्यान, नामजप, स्वाध्याय, भागवत कथा श्रवण, भागवत चिंतन आदि प्रमुख साधन है। इसके अतिरिक्त तीर्थयात्रा, व्रत, यज्ञ, पर्व–त्यौहार मनाना विरह में व्याकुल होकर रोना, आदि भी प्रमुख साधन है।
4. परोपकार प्राप्ति (संसार को ईश्वर का स्वरूप मानना)–सम्मान, सेवा, दान, क्षमा, अहिंसा आदि प्रमुख साधन है।
5. तप प्राप्ति–

तन–1.शारिरिक श्रम 2. योग–व्यायाम–प्राणायाम 3. सेवा आदि तन का प्रमुख तप है।

मन– 1.कामनाओं का त्याग, 2. इन्द्रिय सयंम (भोग–विलास का त्याग),

3. कुसंग एवं र्दुगुणों का त्याग (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या, आलस्य, हिंसा, चोरी, द्वेष, भय, शोक, प्रमुख र्दुगुण है)

4.सदगुणों को अपनाना–निःसंगता अर्थात संग रहित,सांसारिक लोगों से न मिलना, सांसारिक बातों एवं नारी प्रसंगों से दूर रहना, एकांतसेवन करना, दम अर्थात ईन्द्रीयों का संयम एवं दमन, शम अर्थात शांत रहना, दया, अमानिता अर्थात स्वयं मानरहित रहकर सभी का आदर करना, सहनशीलता, अजातशत्रू अर्थात वैरभाव एवं परदोषों के चिंतन से रहित, सरलता, संतोष, अपरिग्रह अर्थात संग्रह न करना, निष्कामता, अनिकेत अर्थात रहने के स्थान में ममता का न होना, समता, र्निद्वंदता अर्थात सभी कामनाओं एवं हर्ष–शोक, आशा–ममता, प्रिय–अप्रिय एवं संकल्प–विकल्प से रहित, तितिक्षा (प्रारब्ध या प्रकृति से प्राप्त सुखः– दुखः से उद्विग्न न होना), र्निभयता, कर्षण अर्थात स्वावलंबन एवं सुविधाओ का न्यूनतम उपयोग,अहिंसा, ईमानदारी, शोच, श्रद्धा, धैर्य,कृतज्ञता,धर्मपरायणता, आदि प्रमुख गुण है।

5.अष्टांग योग साधना आदि मन का प्रमुख तप है।

वचन–सत्य बोलना, कम बोलना, प्रिय बोलना, चुगली एवं निंदा–स्तूति, आत्म प्रशंसा,धर्मसम्मत बोलना, सांसारिक बातों का त्याग ही वाणी का तप है।

आहार– उपवास, तामसिक आहार का त्याग, सात्विक एवं पौष्टिक आहार लेना, अल्पाहार एवं व्रत यथासंभव पराये अन्न का त्याग ही आहार संबन्धि तप है।

ब्रह्मचर्य– नारी संबन्धि प्रसंगों का त्याग करना एवं परस्त्रि को माता मानना, ।

सारांश– ईश्वर ही सब कुछ बने हुए है। सब कुछ ईश्वर के द्वारा ही सोचा, बोला, एवं किया जा रहा है। इस संसार में ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा कुछ नहीं, तुम्हारा कोई नहीं है। ईश्वर दर्शन ही मानव जीवन का एक मात्र उद्वेश्य है। संसार के सभी संबन्ध, धन–सम्पत्ति, सुख एवं भोग अनित्य, असत्य एवं नर्क के द्वार है। तन, मन, धन से जीव, जगत, एवं जगदीश की तप, परोपकार, एवं भक्ति से साधना करो।

संकलनकर्ता–संदीप दाधीच